वैद्य सुखलाल पंसारी

झारखंड में औषधीय पौधों के प्रचार प्रसार के लिए समर्पित

क्षेत्रीय सह सुविधा केन्द्र
पूर्व क्षेत्र (आरसीएफसी - ईआर)
राष्ट्रीय औषधीय पादप वोर्ड (एनएमपीबी)
आयुष मंत्रालय, भारत सरकार
जादवपुर विश्वविद्यालय, कोलकता

वैद्य सुखलाल विश्व आयुर्वेद एवं औषधीय पौधों के प्रचार प्रसार के लिए जाना–पहचाना नाम हैं। वे झारखंड में औषधीय पौधों से चिकित्सा पद्धति के विकास, उससे होने वाले लाभ एवं आय के बारे में लोगों को प्रशिक्षित करने के मिशन के लिए हमेशा समर्पित रहते हैं। आदिवासी व ग्रामीण चिकित्सकों को औपचारिक मान्यता दिलाने के लिए प्रतिबद्ध योद्धा हैं।

वैद्य सुखलाल जी 67 वर्ष के हैं (23 मार्च, 1955 को जन्म)। अच्छे कारणों के लिए लड़ने का उनका जज्बा दस साल की उम्र से ही रहा है। विभिन्न छात्र आंदोलन, राष्ट्रीय महत्व के आंदोलन, उन्नत भारत अभियान में समर्पित हैं। वर्तमान में वे ग्रामीण व आदिवासी चिकित्सा पद्धति तथा औषधीय पौधों के ज्ञान का प्रचार करनेवाले स्वदेशी आंदोलन–स्वदेशी बनौषधि के विकास के एक सक्रिय प्रतिपादक हैं।

वैद्य सुखलाल जी के पास 300 से अधिक औषधीय पौधों का ज्ञान तथा संग्रह है, जिनमें पेड़, प्रकंद, जलीय पौधे, परजीवी पौधे, आरोही आदि शामिल हैं। समुचित भूमि के अभाव में वे अपने निवास की छत पर 220 से अधिक औषधीय पौधों (स्थानिक और विदेशी) की प्रजातियां उगा रहे हैं। 2012 से कम्युनिटी हॉल परिसर के पास की सामुदायिक भूमि का भी उपयोग करते है। औषधीय पौधों की प्रजातियों में शामिल हैं – पीली कनेर (थेवेटिया पेरुवियाना), चांदनी (तबेर्नामोंटाना दिवारिकाटा), तुलसी (ऑसिमाम बासिलिकम), नोनी (मोरिंडा सिट्रिफोलिया), अरनी (क्लेरोडेन्ड्रम मल्टीफ्लोरम), कटसरैया (बैरलेरिया प्रिओनाइटिस), दारुहल्दी (बेरबर्स अरिस्टाटा), भारंगी (रोथेका सेराटा), कलिहारी (ग्लोरियोसा सुपरबा), सरफुंका (टेफ्रोसिया पुरपुरिया), गुडा शार्करा (ग्रेविया हिरसुता), सहस्त्रमुली (एलीट्रारिया एकौलिस), सफेद मूसली (क्लोरोफाइटम बोरीविलियनम), सोनापाटा (ओरॉक्सिलम इंडिकम) आदि।

उनके वर्तमान मिशन में पारंपरिक चिकित्सकों की पहचान कर उन्हें संगठित करने में लगे हैं। स्थानीय ग्रामीण आदिवासी उपचार प्रणालियों में प्रयुक्त औषधीय पौधों की प्रजातियों का संग्रह, आदिवासी चिकित्सा ज्ञान संसाधनों के प्रसार के लिए कार्यक्रम आयोजित करना, इस क्षेत्र में प्रमुख हितधारकों की आय बढ़ाने के लिए कार्यक्रम आयोजित करना और सरकार और सार्वजनिक स्तर पर लुप्तप्रायः औषधीय पौधों की प्रजातियों के संरक्षण के महत्व के बारे में जागरूक करना।

वह झारखंड के आदिवासी चिकित्सकों या पारंपरिक चिकित्सकों से ज्ञान प्राप्त करने के बाद पारंपरिक उपचार प्रणाली का भी अभ्यास कर रहे हैं। वह अपने स्वयं के छत के भंडार से एकत्रित औषधीय पौधों से ताजा तैयार किये गये अपने स्वयं के योगों का उपयोग करते हैं।

इन्हें 28 साल पुराने घाव को बिधारा (अर्जीरिया नर्वोसा) नामक आरोही की पत्तियों से उपचारित करने का श्रेय प्राप्त है। अपने स्वयं के चमत्कारी अनुभव के बाद वे जनजातीय चिकित्सा के प्रबल पक्षधर बन गये। उन्होंने वैद्य सीताराम उरांव के उपचार के तहत केवल 14 दिनों में कई हड्डी फ्रैक्चर से पूरी तरह से ठीक होने की घटना की गवाही दी, जबकि एक सक्षम आर्थोपेडिक्स सर्जन ने शल्य चिकित्सा और दवा के माध्यम से चार महीने लंबी चिकित्सा निर्धारित की।

सुखलालजी ने जून 2000 से स्वदेशी चिकित्सा कार्यशाला का आयोजन करके औषधीय पौधों से संबंधित अपनी अथक यात्रा शुरू की, जिसमें आसपास के पारंपरिक चिकित्सकों, विशेषज्ञों और अन्य हितधारकों ने भाग लिया। उन्होंने वनौषधि लगाओ अभियान के साथ धनबाद और आसपास के जिलों में ग्रामीणों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया. जहां उन्होंने ग्रामीण जनता के बीच जागरूकता पैदा करने और औषधीय पौधों की खेती को बढ़ावा देने के लिए 12 गांवों में 12 कार्यक्रमों का आयोजन किया।

सुखलालजी ने झारखंड में ज्ञान के व्यापक प्रसार के लिए 10 (दस) स्कूलों, कॉलेजों और संस्थानों में और नागपुर में सेंट्रल माइन प्लानिंग एंड डिजाइन इंस्टीट्यूट लिमिटेड (CPDMI) के क्षेत्रीय संस्थान में हर्बल गार्डन बनाने के लिए बीज या रोपण सामग्री और तकनीकी सहायता प्रदान की है। उन्होंने सीएमपीडीआई, नागपुर में हर्बल गार्डन स्थापित करने के लिए संबंधित तकनीकी विशेषज्ञता के साथ 105 औषधीय पौधों को भेजा है।

वह 2000–2003 के दौरान कपार्ट के कार्यकारी सदस्य के रूप में कार्यरत थे और ग्रामीण स्वास्थ्य सुधार के लिए फंड को चौनलाइज किया। एक संरक्षक के रूप में, उन्होंने विद्वान (पीएचडी) का मार्गदर्शन किया है, जिन्होंने यादवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता से बिधारा (अर्गीरिया नर्वोसा) पर अपनी थीसिस पूरी की है।

औषधीय पौधों के उपयोग घर और खेत में खेती, प्रकृति में संरक्षण और जनजातीय चिकित्सा के प्रचार–प्रसार के उनके दृढ़ मिशन पर समर्पित आंदोलन प्रशंसनीय है और प्राचीन और पारंपरिक ज्ञान पर आधारित एक औषधीय प्रणाली के साथ आम जनता को स्वस्थ रहने में, ज्ञान–और प्रकृति के साथ एकरूपता में, सहायक होगा।

अधिक जानकारी के लिए कृपया संपर्क करें:

प्रोफेसर (डॉ.) आशिस मजुमदार, नोडल समन्वयक,
coordinatorrcfc@jadavpuruniversity.in

डॉ. संजय बाला, क्षेत्रीय निदेषक
rdrcfc@jadavpuruniversity.in

क्षेत्रीय–सह–सुविधा केन्द्र, पूर्व क्षेत्रएनएमपीबी, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार, यादवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता–700032
टेलीफोन : 91.33.24146979, फैक्स: +91.33.24146886 ई–मेल: rcfcnmpb@jadavpuruniversity.in,
वेबसाइट: http://www.rcfceast.org

राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार, आयुष भवन, आईआरसीएस एनेक्सी बिल्डिंग, रेड क्रॉस रोड,
नई दिल्ली – 110001, दूरभाष: + ९१-११-२४६५१८२५, फैक्स: +९१-११-२४६५१८२७, ईमेल: info-nmpb@nic-in,
वेबसाइट: http://www-nmpb-nic-in